विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ **दिनांक -24 - 02 - 2021**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज अव्यय के बारे में अध्ययन करेंगे।

समुच्चयबोधक के भेद

समुच्चयबोधक के दो भेद होते हैं

- समानाधिकरण समुच्चयबोधक
- व्यधिकरण समुच्चयबोधक

1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक – दो या दो से अधिक समान पदों, उपवाक्यों या वाक्यों को आपस में जोड़ने वाले शब्दों को समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहते हैं; जैसे- या, न बल्कि, इसलिए, और, तथा आदि; जैसे– आयुष व नेहा भाई बहन हैं।
मैंने कोशिश तो की, लेकिन काम नहीं बना। रामायण तथा महाभारत काव्य हैं।
उपर्युक्त वाक्यों में और, लेकिन, व, तथा दो समान पदों के उपवाक्यों तथा वाक्यों को जोड़ रहे हैं।

2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक – एक अथवा एक से अधिक आश्रित उपवाक्यों को आपस में जोड़ने वाले शब्द व्यधिकरण समुच्चयबोधक कहलाते हैं; जैसे- तथापि, यद्यपि, कि, क्योंकि, ताकि आदि। जैसे- अभी से परीक्षा की तैयारी करो, ताकि अच्छे अंक ला सको।

विस्मयादिबोधक शब्द

विस्मय + आदि = आश्चर्य तथा अन्य मनोभाव बोधक + ज्ञान कराने वाला।
यानी मन के भावों (हर्ष, शोक, भय, उत्साह, घृणा आदि) का बोध कराने वाले शब्द।
जो शब्द विस्मय, शोक, भय, घृणा, हर्ष आदि का बोध कराते हैं, उन्हें विस्मयादिबोधक कहते हैं।

बहुविकल्पी प्रश्न

1. हर्ष, शोक, घृणा, भय आदि का बोध कराने वाले शब्द कहलाते हैं

(i) समुच्चयबोधक

(ii) विस्मयादिबोधक

(iii) क्रियाविशेषण

(iv) संबंधबोधक

2. इस (!) चिह्न को कहते हैं

(i) प्रश्नसूचक

(ii) विस्मयसूचक

(iii) निषेधसूचक

(iv) इनमें से कोई नहीं